आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 30-03-2016 ● अंक-479 ● तारीख - 31 मार्च 2016, चैत्र कृष्ण - 7 ● गुरूवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-04 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

ईश्वर सरल है

श्री सत्य साई बाबा का कहना है कि "ईश्वर सरल है और ईश्वर के अलावा सब कुछ जटिल है।" वैसे यह कथन विचित्र प्रतीत होता है। जब ईश्वर ने सबका सृजन किया तो क्या यह संभव है कि सरल ने जटिल का सृजन किया ? इस प्रश्न का उत्तर भी श्री सत्य साई बाबा के इस कथन में निहित है –

स्मरण रखो कि यह सब कुछ एक नाटक है और ईश्वर ने इस नाटक में तुम्हें एक भूमिका दी है। उस भूमिका का निर्वाह भली प्रकार करो और यहीं तुम्हारा कर्तव्य समाप्त होता है। 'उसी' ने नाटक की संरचना की और 'वही' इससे आनन्दित होता है।

ड्रामे का कथानक थोड़ा जटिल और संघटनाओं से भरा होना आवश्यक है पर इसके निदेशक व रचनाकार सरल हैं। वे सरल रचनाकार चाहते हैं कि उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति मानव सरल हो।

त्रेतायुग का उनका कथन है "निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा।" द्वापर में उन्होंने पुनः बांसुरी को होठों से लगाकर सन्देश दिया कि बांसुरी के समान सीधे, सरल और खोखले अर्थात इच्छारहित हो जाओ तो मैं तुम्हें अपने दिव्य होठों से लगा लूंगा और फिर तुममें से मेरे ही स्वर फूटेंगे। कलियुग में पुनः उन्होंने श्री सत्य साई के रूप में अवतरित होकर निर्देश दिया कि "सीधे और सच्चे बनो" और साथ ही "सभी एक है, सबके जैसे बनो।" यही प्रशान्ति पथ है।

"प्रशान्ति पथ" पत्रिका इसी प्रशान्ति पथ पर अग्रसर होने में हम सबकी सहायता करे।

साभार–श्री राधेश्याम अग्रवाल

गर्भवती महिलाओं व वरिष्ठ नागरिकों के लिए ट्रेनों में बढ़ा बर्थ का कोटा

रेल से सफर करने वाले वरिष्ठ नागरिक व महिलाओं के लिए खुशखबरी है. ट्रेनों में यात्रा से पूर्व सीट के लिए अब उन्हें चिंतित नहीं होना पड़ेगा। वरिष्ठ नागरिकों के साथ महिलाओं को भी आसानी से सीट मिल जायेगी। रेल बजट में की गयी घोषणा के मद्देनजर रेल मंत्रालय ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए रेल गाडियों में आरक्षण कोटा बढ़ाने व मालभाड़े को तर्कसंगत करने की घोषणा की है। नया नियम एक अप्रैल से लागू होगा। इसको लेकर रेल मंत्रालय ने प्रेस विज्ञप्ति जारी की है।

इसमें कहा गया है कि वरिष्ठ नागरिकों का कोटा 50 फीसदी बढ़ा दिया गया है। वरिष्ठ नागरिकों के लिए आरक्षित बर्थ की संख्या में बढ़ोतरी किये जाने से अब उनके लिए 80 से 90 बर्थ उपलब्ध होंगे। वहीं गर्भवती महिलाओं की परेशानियों को ध्यान में रखकर प्रत्येक शयनयान श्रेणी के डिब्बे में कोटा बढ़ाकर छह लोअर बर्थ व एसी–टू व एसी थ्री में तीन लोअर बर्थ कर दिया गया है।

वरिष्ठ नागरिकों के अलावा 45 साल से ज्यादा उम्र की महिलाएं व गर्भवती महिलाएं इस सुविधा का लाभ उठा सकेंगी। बता दें कि फिलहाल यह कोटा उपलब्ध है जिसमें एक ही आवेदन पर दो यात्री जिनमें एक वरिष्ठ नागरिक या 45 साल से अधिक उम्र की महिला या गर्भवती महिला हो, तो इसका लाभ ले सकते हैं।

प्रभु के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करें

ध्यान टिकाने की कला बहुत से लोग सीखना चाहते हैं, परंतु अलग–अलग कारणों से। कुछ लोग शांति पाने के लिए इसे सीखना चाहते हैं तो कुछ लोग शारीरिक स्वास्थ्य में लाभ के लिए। कुछ लोग इसका अभ्यास अपनी एकाग्रता बढ़ाने के लिए करते हैं, ताकि अपने काम या अध्ययन में बेहतर हो पाएं। कुछ इसलिए सीखते हैं कि मानसिक या अलौकिक शक्तियों का विकास कर सकें। कुछ लोग ध्यान–अभ्यास इसलिए करते हैं कि वे प्रभु को पाना चाहते हैं।

प्रार्थना एवं ध्यान–अभ्यास के सभी फायदों में से सबसे बड़ा फायदा है, प्रभु से एकमेव होना। हम अपने अंदर विद्यमान ज्योति एवं श्रुति से जुड़कर परमात्मा का अनुभव कर सकते हैं और इस धारा से जुड़कर हम परमात्मा की गोद में पहुंच सकते हैं। बहुत से लोग अपने बारे में बहुत बढ़–चढ़कर सोचते हैं। हम सोच सकते हैं कि शारीरिक रूप से हम बहुत ताकतवर हैं, बहुत सुंदर हैं, अपनी बौद्धिक क्षमता या अपनी उच्च शिक्षा के कारण अहंकार कर सकते हैं। हमें अपनी नौकरी, अपने काम या अपनी पदवी का भी अहंकार हो सकता है। हमें इस बात का भी अहंकार हो सकता है कि हम धनी हैं या हमने इस भौतिक संसार में अपने लिए एक साम्राज्य स्थापित कर लिया है। ये सभी परिस्थितियां हमें ऐसा बना देती हैं कि हम दूसरों को अपने से हीन समझने लगते हैं। जब तक हम ऐसी अवस्था में रहते हैं, तब तक हम किसी दूसरे की सहायता करने के योग्य नहीं रहते हैं। यदि हम धनी हैं तो किसी की आर्थिक रूप से मदद कर सकते हैं। अगर हम शक्तिशाली हैं तो किसी की शारीरिक रूप से मदद कर सकते हैं। परंतु इस प्रक्रिया में अगर हम अहंकार की भावना रखते हैं तो वह मदद हमारी आध्यात्मिक प्रगति में उपयोगी नहीं होगी बल्कि बाधक होगी।

आध्यात्मिक प्रेम हमें हर पल पुकार रहा है। यदि हम अपनी नजरें उस दिशा में घुमाएं और पूरी निष्ठा के साथ प्रभु के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करें, तो प्रभु हमारा जवाब अवश्य देंगे। यह विश्वास करना कठिन है, परंतु वह एक मात्र वस्तु, जो हमें सदा–सदा के आनंद एवं प्रेम से अलग रखती है, हमारा अहम ही है। हमारी बुद्धि एवं अहम हमें भौतिक दुनिया में खुशी की खोज में लगाए रखते हैं। यदि हम रुक जाएं, अपने अंदर की शांत–अवस्था में स्थित हो जाएं और प्रभु से प्रार्थना करें तो वे निश्चित रूप से हमारे सम्मुख प्रकट होंगे। वे हमें इस दुनिया के मायाजाल से ऊपर उठा लेंगे और दिव्य प्रकाश के मंडलों में ले जाएंगे जहां हम अमर–प्रेम के सोते से जी भरकर प्रेमामृत पी सकेंगे।

ऊर्जा उत्पन्न करता है – साहस

परिस्थितियां किसी के भी साथ न तो सदा अनुकूल रहती है न प्रतिकूल और न ही किसी एक वर्ग या व्यक्ति के किए बनती है इसलिए सदा अनुकूलता की उम्मीद करना न केवल व्यर्थ है, बल्कि अनावश्यक, अनुचित व हानिकारक भी है। उचित ये होगा की आप अपनी साहसिकता, आत्मविश्वास और सहन शक्ति बढ़ाये, जो अनिवार्य हो उसे धेर्यपूर्वक सहन करते हुए बुद्धिमत्ता पूर्ण सोच–विचार कर निर्णय लेते हुए संकट का उचित व परिस्तिथियों के अनुरूप संकट व समस्या का हाल ढूंढे, जो उचित हो वे उपाय सोचने और प्रयास करने में कोई कमी न रहने दी जाये, हर स्थिति में संतुलन बनाये रखा जाये, कठिनाइयों व मुसीबतों से डर नहीं. वरन अपनी प्रतिभा से हाल व उपाय निकालने में बिना समय गवांये लग जाना ही साहस कहलाता है। साहस वह हथियार है जो प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलना संभव बनता है।

सामान्यतः लोग साहसी व्यक्ति का ही साथ देना चाहते है और उसी के नेतृत्व में नये चुनौतीपूर्ण व गैर–पारम्परिक तरीके से कार्य को करने और सफलता प्राप्त करना चाहते है। जिस प्रकार आत्मविश्वास व्यक्ति में क्षमता का संचार करता है उसी तरह साहस उसमें ऊर्जा उत्पन्न करता है और व्यक्ति की जीवनचर्या में किए जाने वाले कार्यों में इसका सर्वाधिक महत्त्व और ये तमाम निर्णय की शक्ति का केंद्र बिन्दु होता है।

मानव मन के बोल

कर्म ही पूजा है

गतांक से आगे.....

किये हुए पाप की लकीर को आप मिटा नहीं सकते है क्योंकि वो आपके हाथ में नहीं होता है।

मैं आपको निवेदन कर रहा था रोहट में वो भी एक नया अनुभव, तब हम रामायण का पाठ करते थे। रामायण का पाठ करने में मेरी ईच्छा रहती थी केवल दोहे ही नहीं पढ़े जाये, उन दोहों का अर्थ भी बताया जाये।

धर्म न, कर्म न, काम न रूचि, गति ना चांहु निर्वाण,
जन्म–जन्म रति राम पद, यह वरदान मन आन।
जन्म–जन्म प्रभु आपके चरणों में मेरा मन लगे।

एक बार हमारे प्रिय रघुराम जी सुना रहे थे। कैलाश जी मैंने एक मूर्ति का ऑर्डर दिया। मूर्तिकार भी अच्छे थे। उन्होंने कहा तीन महिनें में मूर्ति बना दूंगा। दो महिनें में जंघों से ऊपर तक तो बना लिया। 10 से 15 से 20 दिन हो गये पर चरण नहीं बना रहा। मैंने उनको कहा भाई साहब आपने इतना बड़ा काम तो कर दिया, चरण भी जल्दी बना दीजिये। बोले भाई साहब! इतना बड़ा काम किया वो बड़ा काम नहीं था वो तो थोड़ा काम था। सबसे बड़ा काम तो चरण ही बनाना है। मैं बार–बार सोच रहा हूं कैसे चरण हो जिन चरणों में लोग झुकेंगे? इनके चरण कमलों को लोग प्रणाम करते है। आप को लोग सभी बड़ा मानते है। आपको आदर्श मानते है। कैसा आचारण होना चाहिये? पूर्ण चरित्रवान, चरित्र कथित चरणों में झुक रहे है। चरण कमल मूर्तिकार ने बनाया, लेकिन बहुत ज्यादा समय लगा–उसमें।

पाली–मारवाड़ के बहुत अनुभव है, उस समय 10 रूपये किलों में देशी घी मिलता था। मैं जाता था आधा किलो घी लाता था। कमला जी खूब सिलाई करती थी और हमारे भैरूजी जिनके मकान में हम रहते थे उनके परिवार से इतना प्रेम हो गया था। जब उनकी बिटिया का विवाह हुआ, तो हमारे पड़ोस में लबाना साहब रहते थे ए.पी.एम. साहब थे। उनसे तो मकान खाली करवाया कि भाई बेटी का विवाह।

क्रमश अगले अंक में ...

शीतला माता व्रत पर्व

शीतला व्रत पर्व कथा शीतला माता महात्म्य

इस व्रत का पालन आमतौर पर महिलाएं करती हैं। शीतला माता के व्रत का महात्मय है कि जो भी व्रत रखकर इनकी पूजा करता है वह दैहिक और दैविक ताप से मुक्त हो जाता है। यह व्रत संतान प्रदान करने वाला एवं सौभाग्य देने वाला है। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए यह व्रत उत्तम कहा गया है।

शीतला माता व्रत कथा

कथा के अनुसार एक साहूकार था जिसके सात पुत्र थे। साहूकार ने समय के अनुसार सातों पुत्रों की शादी कर दी परंतु कई वर्ष बीत जाने के बाद भी सातो पुत्रों में से किसी के घर संतान का जन्म नहीं हुआ। पुत्र वधूओं की सूनी गोद को देखकर साहूकार की पत्नी बहुत दुःखी रहती थी। एक दिन एक वृद्ध स्त्री साहूकार के घर से गुजर रही थी और साहूकार की पत्नी को दुःखी देखकर उसने दुःख का कारण पूछा। साहूकार की पत्नी ने उस वृद्ध स्त्री को अपने मन की बात बताई। इस पर उस वृद्ध स्त्री ने कहा कि आप अपने सातों पुत्र वधूओं के साथ मिलकर शीतला माता का व्रत और पूजन कीजिए, इससे माता शीतला प्रसन्न हो जाएंगी और आपकी सातों पुत्र वधूओं की गोद हरी हो जाएगी।

साहूकार की पत्नी ने तब माघ मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को अपनी सातों बहूओं के साथ मिलकर उस वृद्धा के बताये विधान के अनुसार माता शीतला का व्रत किया। माता शीतला की कृपा से सातों बहुएं गर्भवती हुई और समय आने पर सभी के सुन्दर पुत्र हुए। समय का चक्र चलता रहा और माघ शुक्ल सप्तमी तिथि आई लेकिन किसी को माता शीतला के व्रत का ध्यान नहीं आया। इस दिन सास और बहुओं ने गर्म पानी से स्नान किया और गरमा गरम भोजन किया। माता शीतला इससे कुपित हो गईं और साहूकार की पत्नी के स्वप्न में आकर बोलीं कि तुमने मेरे व्रत का पालन नहीं किया है इसलिए तुम्हारे पति का स्वर्गवास हो गया है। स्वप्न देखकर साहूकार की पत्नी पागल हो गयी और भटकते भटकते घने वन में चली गईं।

वन में साहूकार की पत्नी ने देखा कि जिस वृद्धा ने उसे शीतला माता का व्रत करने के लिए कहा था वह अग्नि में जल रही है। उसे देखकर साहूकार की पत्नी चौंक पड़ी और उसे एहसास हो गया कि यह शीतला माता है। अपनी भूल के लिए वह माता से विनती करने लगी, माता ने तब उसे कहा कि तुम मेरे शरीर पर दही का लेपन करो इससे तुम्हारे ऊपर जो दैविक ताप है वह समाप्त हो जाएगा। साहूकार की पत्नी ने तब शीतला माता के शरीर पर दही का लेपन किया इससे उसका पागलपन ठीक हो गया व साहूकार के प्राण भी लौट आये।

शीतला माता व्रत विधि

कथा में माता शीतला के व्रत की विधि का जैसा उल्लेख आया है उसके अनुसार शीतला सप्तमी के दिन स्नान ध्यान करके शीतला माता की पूजा करनी चाहिए। इस दिन कोई भी गर्म चीज सेवन नहीं करना चाहिए। शीतला माता के व्रत के दिन ठंडे पानी से स्नान करना चाहिए। ठंडा–ठंडा भोजन करना चाहिए। उत्तर भारत के कई हिस्सों में इसे बसयरा भी कहते हैं। इसे बसयरा इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस दिन लोग रात में बना बासी खाना पूरे दिन खाते हैं। शीतला सप्तमी के दिन लोग चुल्हा नहीं जलाते हैं बल्कि चुल्हे की पूजा करते हैं। इस दिन भगवान को भी रात में बना बासी खाना प्रसाद रूप में अर्पण किया जाता है। इस तिथि को घर के दरवाजे, खिड़कियों एवं चुल्हे को दही, चावल और बेसन से बनी हुई बड़ी मिलाकर भेंट किया जाता है।

इस तिथि को व्रत करने से जहां तन मन शीतल रहता है वहीं चेचक से आप मुक्त रहते हैं। शीतला सप्तमी के दिन देश के कई भागो में मिट्टी पानी का खेल उसी प्रकार खेला जाता है जैसे होली में रंगों से।

मुट्ठी में तकदीर हमारी

गतांक से आगे.....

तन का सुतंत्र खुशियों का मंत्र

रक्तदान की घटना... पाचन तंत्र

अरे, ये उत्तक, ये लीवर आपने और हमने नहीं बनाया। अभी जयपुर में एक पतिदेवता का लीवर खराब हो गया था। पत्नी ने कहा, लीवर का एक हिस्सा आप मेरे लीवर में से निकाल लीजिये और मेरे पतिदेवता के लीवर में स्थापित कर दीजिये। उसका 14 घण्टे ऑपरेशन चला, लीवर खराब हो गया था, उसके शरीर में दूसरा लीवर प्लांट हुआ, लगभग 15 लाख रूपये का व्यय आया पर आपी तो भूली ग्या, आपी तो चूकी ग्या।

हां आज से आप संकल्प लीजिये। जो मेरे भाई–बन्धु इन पंक्तियों को पढ रहें हैं।

बोलिये श्रीकृष्ण कन्हैयालाल की जय।

तो मैं निवदेन कर रहा था कि करोड़ों करोड़ों ऊत्तकों से ये अंग बना। बिना इस अंग के न तो रामजी–रामजी बोल सकते हैं, न रामजी का काम कर सकते हैं। रामनाम सत्य हो जाता है और सत्य के साथ गत हो जाता है। तो आपणे कई करनो, ऊत्तकों को सुरक्षित रखना, कोशिकाओं की रक्षा करना, व्यसन नहीं करना और एक व्यसन आज से सीख लो, नारायण का काम करना।

नारायण का काम, मनुजजी करते थे। नारायण का काम इतना करते थे कि दुष्ट, बेईमान, बेदर्दी ने इतनी नालायकी की, कि नकली दवाइयां वहाँ पहुँचा दी, और जिस बेचारे को कल आपने पढ़ा, जिस व्यक्ति को कल उल्टियां हो रही थी, दस्त लग रही थी, डिहाइड्रेशन हो रहा था। इसको कहते हैं निर्जलीकरण, जल की कमी हो जाना। अपने शरीर में 70 प्रतिशत जल होता हैं, 70 प्रतिशत नीर होता है। हां, तो उल्टी दस्त से पानी की कमी हो जाती है। उस समय उबले हुए पानी में, कुछ नमक और कुछ शक्कर। ये सबसे अचूक है, कुछ थोड़ा सा नमक और कुछ थोड़ी शक्कर पानी को थोड़ा सा उबालकर, उसमें डालकर पीना चाहिये। ये पीने से पानी बढ़ जाता है और खतरा नहीं होता है। आपने देखा होगा, कभी ऐसा हो जाता है तो तुरन्त ग्लूकोज़ चालू कर देते हैं। तो ये, ऐसा होना चाहिये।

तो ऊत्तक हमारे भगवान ने बनाए हैं। कपिल भगवान ने? माता देवहूति को कहा– माते गर्भ में हमारे कोशिका और ऊत्तक बन गये।

मुख्य टिश्यु इस देह में, चार तरह के होय।
इपिथेलियम, कनेन्टिव टिश्यु,
मस्कुलर, नर्वस होय।।

चार तरह के बताये हैं, टिश्यु कहते हैं अंग्रेजी में ऊत्तक को। ये चार तरह के होते हैं। भगवान ने बनाये हैं–महाराज।

अरे घमंड करो तो कणी पे करो? आपी, एक ऊत्तक भी कोनी वणाई सकां। मेरे एक कोई थे, जो शराब बहुत पीते थे। हम तो कह–कह कर के थक गए। पण मने कई केता, अरे आप तो पुराने जमाने के हो। हम तो नये जमाने के हैं, दारू पीना तो शिष्टाचार है। मैंने कहा–भाई ये तो माने ही कोनी। अब माने ही कोनी तो, कई करनो अबे। वो कहते हैं कि अन्धा रे आगे रोणो और हिया रो आंसू खोणो। तो अणा ने केणो कम कर दिदो। अब एक बार वणाने लकवो वेई ग्यो। अब लकवा हो गया, आधा शरीर सुन्न पड गया। एक हाथ काम नहीं करे, एक पैर काम नहीं करे महाराज और आधो मुंडो वांको–टेढ़ो वेई ग्यो और बोलनी भी नहीं आवे। वो कणी रे काम नी आतो हो, मदद कोनी करतो और अटकाई देतो हो। कणी कणी आदमी रे आदत वेवें नी, अटकाणो क्यान, क्यान फूट डलाणी।

अरे सोहन लाल, तुम्हारे लिये तुम्हारा मित्र मोहनलाल कुछ ऐसा बोल रहा था भाई–मुझे तो अच्छा नहीं लगा। सोहनलाल क्या बोल रहा था मोहनलाल?

नहीं नहीं कहने वाली बात नहीं, बहुत बुरी बात कही तुम्हारे लिये, अब मैं तो नहीं कहूं।

सोहनलाल– अरे, नहीं कहना तो पड़े।

चाहे जैसी निन्दा कर ली, झूठा बोल दिया, बदमाशी कर ली, बात का बतंगड बना दिया, तिल का ताड़ बना दिया। उस सोहनलाल ने आव देखा ना ताव, जोश में होश नहीं रखा। तुरन्त गया, अरे मोहनलाल, तुमने मेरे लिये ऐसा कैसे बोला? और दोनों की लड़ाई हो गई और वो वापस आकर पँचायती करने लगा। लड़ते काहे को, अरे तूने लड़वा दिया न। इस घर को तुड़वाने का तुम्हें अधिकार किसने दिया। कहाँ चली गई बुद्धि?

जहाँ सुमति तहं सम्पति नाना।

जहाँ कुमति तहं विपत्ति निदाना।।

सुमति और कुमति, मति कहते हैं बुद्धि को। अच्छी बुद्धि हो, वहाँ बिगड़े हुए काम भी बन जाते हैं और जहाँ कुबुद्धि हो, वहाँ बनता हुआ काम भी बिगड़ जाता है। आपको मैं कह रहा था – पेरेलाइसिस हो गया। अब वो कुमति वाले थे, किसी के काम नहीं आते थे, कोई उनकी मदद को आगे नहीं आया। किसी ने मुझे टेलिफोन किया। मेरे मन को आया – अरे दया भगवान ने दी, ये करूणा, स्नेह ये सब धर्म के अंग हैं। आज से सब तरफ बोलना – धर्म का मतलब दया, करूणा, स्नेह, प्रेम, प्यार, सच्चाई, विद्या, बुद्धि, संयम नियम, ध्यान, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, समाधि।

आप पृथ्वी से सहनशीलता सीखें, आकाश से बुलन्दी सीखें, अपना कैनवास छोटा मत रखो। तो मैं उनको लेकर जब यहाँ के बहुत बड़े हॉस्पिटल में गया, उनका सी.टी. स्केन होने लगा। डॉक्टर साहब की बड़ी कृपा थी मेरे ऊपर। मुझे कम्प्यूटर पर बैठने की इजाजत दी। उन्होंने कहा, देखो कैलाश जी भाईसाहब, ये अपने ब्रेन से बारह नसें निकल रही है। देखो, ये नाक के सूंघने की नस, ये कान के सुनने की नस, ये आँख के देखने की नस, ये बोलने की नस, ये हमारी जीभ पर जो 9 हजार स्वाद कलिकाएँ हैं, कड़वा– मीठा। बोलिये कृष्ण–कन्हैया लाल की जय।

आप पधारे बड़े भाग हमारे
नारायण सेवा तीर्थ में
तन–मन से करें हम स्वागत
शब्दों से, फूल और कलियों से।
आप पधारे ..... ।
आज का दिन बड़ा पावन है।
पावन है, मन – भावन है।
गा रहे गीत यहाँ खुशियों के
स्वागत, मंगलमय बेला है।
बिराजे हैं गुरुदेव यहाँ
हम गुरुचरणों में बैठे हैं
करें हम स्वागत, शब्दों से,
फूल और कलियों से।
आप पधारे, बड़े भाग्य हमारे
नारायण सेवा तीर्थ में
तन–मन से करें हम स्वागत
शब्दों से, फूल और कलियों से
आप पधारे, बड़े भाग्य हमारे.....।

दूर करे तनाव – सर्वहित के भाव

रमेश जी गोयल सा ... बाबा होटल

बोलिए गणेश भगवान की जय। बोलिए गिरिराज धरण की जय। बोलिए श्री रामचंद्र भगवान की जय। बोलिए गौरीशंकर महादेव जी की जय। अपने अपने पितृभगवान की जय। अपनी अपनी कुलमाता जी की जय। धरती से भारी माताजी की जय, आकाश से बड़े पिताजी की जय। हर हर महादेव, कैलाशपति भूले मती।

आज बड़े सौभाग्य की बात है, महान दिवस कल के वो क्षण रहे, जब हमारे भारत के जालंधर के पास के गांव के एक भारत पुत्र जिनकी परम् पूज्य माताजी स्वयं साक्षात् भगवती का स्वरूप, जिनके पूज्य पिताजी ज्ञान और सेवा के अवतार, ऐसे माता–पिता के पुत्र और पुत्रादि परिवार, उसमें सोहन जी चढ्ढा साहब जो आज के मुख्य अतिथि के रूप में हमारे साथ विराजमान हैं। वो जालंधर से भारत का नाम रोशन करने के लिए अमेरिका के न्यूयॉर्क महानगर में, जहां के लिए कहा जाता है कि वह विश्व का ऐसा महानगर है, जहां कभी रात नहीं होती, चौबीसों घंटे जहां रोशनी रहती है। ऐसे न्यूयॉर्क में आपने बहुत बड़ा व्यवसाय, छह से अधिक बड़े–बड़े होटल्स, उसके अलावा 15 के आसपास फिलिंग स्टेशन पेट्रोल के, जो वहां गैस बोला जाता है। जो कृपा करके एक डेढ़ दिन पहले ही सिंगापुर से पधारे, परसों रात को सिंगापुर से इतनी लंबी ट्रैवलिंग करके कल ग्यारह बजे पुनः दिल्ली से फ्लाइट में बिराज गए उदयपुर पधारने के लिए, आशीर्वाद इन रोगियों को देने के लिए और साथ में जो महानुभाव आज के कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हैं। बीस साल पहले जिनके एक टेलीफोन ने मेरा हृदय मोहित कर दिया।

क्रमश :

बनाए मजबूत रिश्ते

प्रपंच छोड़ें : प्रपंच बड़ा चटपटा शब्द है। लोग इसे चटखारे ले ले कर इस्तेमाल करते हैं. मसलन, बहू के भाई ने इंटरकास्ट मैरिज कर ली. बस फिर तो बहू का ससुराल के लोगों से नजरें मिलाना मुश्किल हो गया. सासूमां अपने दिए संस्कारों की मिसाल देदे कर बहू के मायके के लोगों की धज्जियां उड़ाने में मशगूल हो गईं.

अपना उत्तरदायित्व समझें: उत्तरदायित्व का मतलब सिर्फ मातापिता की सेवा करना ही नहीं, बल्कि अपने बच्चों के प्रति भी आप के कुछ उत्तरदायित्व होते हैं. आजकल के मातापिता आधुनिकता की चादर में लिपटे हुए हैं. बच्चों को पैदा करने और उन्हें सुखसुविधा देने को ही वे अपनी जिम्मेदारी मानते हैं. लेकिन इस से ज्यादा वे अपनी पर्सनल लाइफ को ही महत्त्व देते हैं. इस स्थिति में यही कहा जाएगा कि आप एक आदर्श मातापिता नहीं हैं. लेकिन इस नए वर्ष में आप भी आदर्श होने का तमगा पा सकते हैं यदि आप अपने उत्तरदायित्वों को पूरी शिद्दत से निभाएं.

झूठ का न लें सहारा: अकसर देखा गया है कि अपनी जिम्मेदारियों से बचने, अपनी साख बढ़ाने या फिर अपनी गलती छिपाने के लिए लोग झूठ का सहारा लेते हैं. संयुक्त परिवार में झूठ की दरारें ज्यादा देखने को मिलती हैं, क्योंकि एकदूसरे से खुद को बेहतर साबित करने की प्रतिस्पर्धा में लोगों से गलतियां भी होती हैं. लेकिन इन्हें नकारात्मक रूप से लेने की जगह सकारात्मक रूप से लेना चाहिए. जब आप ऐसी सोच रखेंगे तो झूठ बोलने का सवाल ही नहीं उठता. इस वर्ष सोच में सकारात्मकता ले कर आएं. इस से पारिवारिक रिश्तों के साथ आप का व्यक्तित्व भी सुधर जाएगा.

आर्थिक मनमुटाव से बचें: आधुनिकता के जमाने में लोगों ने रिश्तों को भी पैसों से तराजू में तोलना शुरू कर दिया है। रिश्तेदारियों में अकसर समारोह के नाम पर धन लूटने का रिवाज है। शादी जैसे समारोह को ही ले लीजिए. यहां शगुन के रूप में लिफाफे देने और लेने का रिवाज है। इन लिफाफों में पैसे रख कर रिश्तेदारों को दिए जाते हैं. जो जितने पैसे देता है उसे भी उतने ही पैसे लौटा कर व्यवहार पूरा किया जाता है। लेकिन ऐसे रिश्तों का कोई फायदा नहीं जो पैसों के आधार पर बनते बिगड़ते हैं. इस वर्ष तय कीजिए कि रिश्तों में आर्थिक मनमुटाव की स्थिति से बचेंगे, रिश्तों को भावनाओं से मजबूत बनाएंगे.

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लेख हमारे देश के संविधान में भी किया गया है, लेकिन परिवार के संविधान में यह हक कुछ लोगों को ही हासिल होता है, जो बेहद गलत है। अपनी बात कहने का हक हर किसी को देना चाहिए. कई बार हम सामने वाले की बात नहीं सुनते या उसे दबाने की कोशिश करते हैं अपने सीधेपन के कारण वह दब भी जाता है, लेकिन नुकसान किस का होता है? आप का, वह ऐसे कि यदि वह आप को सही सलाह भी दे रहा होता है, तो आप उस की नहीं सुनते और अपना ही राग अलापते रहते हैं. ऐसे में सही और गलत का अंतर आप कभी नहीं समझ सकते. इसलिए इस वर्ष से तय करें कि घर में पुरुष हो या महिला, छोटा हो या बड़ा हर किसी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी जाएगी.

सामाजिक रिश्ते

संतुलित और सुखद जिंदगी जीने के लिए पारिवारिक रिश्तों के साथसाथ सामाजिक रिश्तों को भी मजबूत बनाना जरूरी है। आइए हम आप को बताते हैं सामाजिक रिश्तों को बेहतर बनाने के 5 तरीके।

ईगो का करें त्याग: ईगो बेहद छोटा लेकिन बेहद खतरनाक शब्द है। ईगो मनुष्य पर तब हावी होता है जब वह अपने आगे सामने वाले को कुछ भी नहीं समझना चाहता. उसे दुख पहुंचाना चाहता हो या फिर उस का आत्मविश्वास कम करने की इच्छा रखता हो. अकसर दफ्तरों में साथ काम करने वाले साथियों के बीच ईगो की दीवार तनी रहती है। इस चक्कर में कई बार वे ऐसे कदम उठा लेते हैं, जो उन के व्यक्तित्व पर दाग लगा देते हैं या कई बार वे सामने वाले को काफी हद तक नुकसान पहुंचाने में कामयाब हो जाते हैं. लेकिन क्या ईगो आप को किसी भी स्तर पर ऊंचा उठा सकता है? शायद नहीं यह हमेशा आप से गलत काम ही करवाता है। आपको खराब मनुष्य की श्रेणी में लाता है, तो फिर ऐसे ईगो का क्या लाभ जो आप को फायदे से ज्यादा नुकसान पहुंचाता हो? ठान लीजिए कि ईगो का नामोनिशान अपने व्यक्तित्व पर से मिटा देंगे और दूसरों का बुरा करने की जगह अपने व्यक्तित्व को निखारने में समय खर्च करेंगे.

मददगार बनें: मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और हमेशा से समूह में रहता चला आया है। इस समूह में कई लोग उस के जानकार होते हैं तो कई अनजान भी. लेकिन मदद एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। किसी की तकलीफ में उस का साथ देना या उस की हर संभव मदद करना एक मनुष्य होने के नाते आप का कर्तव्य है।

56 भोग नैवेध

श्रीकृष्ण की उपासना अन्य देवों की तुलना में सबसे अधिक की जाती है। श्रीकृष्ण के विषय में यह मान्यता है, कि ईश्वर के सभी तत्व एक ही अवतार अर्थात भगवान श्री कृष्ण में समाहित है। गिरिराज को भगवान श्रीकृष्ण के जन्म उत्सव के अलावा अन्य मुख्य अवसरों पर 56 भोग का नैवेध अर्पित किया जाता है जिसमें पूरी, परांठा, रोटी, चपाती, मक्की की रोटी, सांम, अन्य प्रकार की तरकारी, साग, अंकुरित, अन्न,उबाला हुआ भुट्टा या भुना हुआ, सभी प्रकार की दालें, कढी, चावल, मिली–जुली सब्जी, सभी पकवान, मिठाई, पेड़ा, खीर, हलवा, गुलाबजामुन, जलेबी, इमरती, रबड़ी, मीठा दूध, मक्खन, मलाई, मालपुआ, पेठा, मीठी पूरी, कचौरी, समोसा, चावल, बाजरे की खिचड़ी, दलिया,ढोकला, नमकीन, मुरमुरा, भेलपुरी, चीले, (मीठे, नमकीन दोनों), अचार विशेषकर टींट का, चाट, टिक्की, चटनी, आलू ,पालक आदि के पकौड़े, बेसन की पकौड़ी, मठ्ठा, छाछ, लस्सी, रायता, दही, मेवा, मुरब्बा, सलाद, नीम्बू में घिसी हुयी मूली, फल, पापड़, पापडी, पान, इलायची, सौंफ, लौंग, शुद्ध बिस्कुट, गोली, टॉफी, चाकलेट, गोल–गप्पा, उसके खट्टे मीठे जल, मठरी–शक्कर पारा, खील, बताशा, आमपापड़, शहद, सभी प्रकार की गज्जक, मूंगफली,पट्टी, रेवड़ी, गुड,शरबत, जूस, खजूर, कच्चा नारियल का भोग लगाया जाता है।

मसूड़ों का सिकुड़ना (रिसेशन)-टार्टर से खराब हुए मसूडे

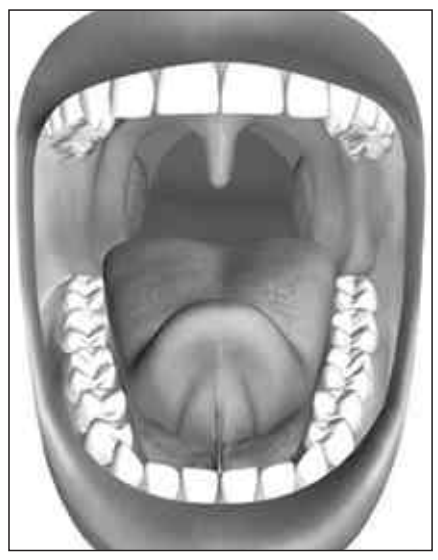

टार्टर से मसूड़े सिकुड़ने लगते हैं और इससे दाँत के जडों का ज्यादा दिखाई देने लगते हैं। टार्टर दाँत की अंदरूनी सतह पर जमा हो जाता है। सोते समय मुँह में लार इकट्ठी हो जाती है। इससे नीचे के सामने के दाँतों में टार्टर जमा हो जाता है। और जैसे ही एक बार टार्टर बनना शुरू होता है यह बढ़ता ही जाता है। अच्छी तरह नियमित रूप से ब्रश करने से हम टार्टर से बचाव कर सकते हैं। ध्यान रहे कि टार्टर हट जाने के बाद भी मसूड़े पहले जैसे ठीक ठाक नही होते।

दाँतों में फसा खाना नुकसानदेह है–मसूड़ों के संक्रमण का एक और कारण मसूड़ों और दाँतों के बीच खाने के कण फंसे रह जाना भी है। यह ठीक से ब्रश न करने से होता है।

सभी की अपनी–अपनी उपयोगिता है

प्रकृति ने इस धरती पर जो कुछ भी रचा है, उसमें से कुछ भी व्यर्थ नहीं है। सबकी अपनी–अपनी उपयोगिता है। जी हाँ, हम भी। भले ही हम सभी पेड़ों को एक जैसा मान लें, लेकिन वे एक जैसे होते नहीं हैं। यहाँ तक एक ही श्रेणी की वस्तुएँ एक जैसी नहीं होती। क्या आप विश्वास करेंगे कि खरबूजे तक के बारह सौ प्रकार होते हैं ? क्या सभी आमों का रस एक जैसा होता है ? इसका मतलब यह हुआ कि प्रकृति कभी भी अपने आपको ज्यों का त्यों नहीं दोहराती। वह हरेक के जरिए कुछ न कुछ नया रचती है। जी हाँ, इसी तरह हम को उसने मनुष्य तो बनाया है, लेकिन कुछ न कुछ नया भी बनाया है। हम दूसरों की तरह होकर भी पूरी तरह दूसरों की तरह नहीं हैं। हम किसी न किसी मायने में दूसरे से ठीक उसी प्रकार अलग हैं, जैसे लंगड़ा आम चौसे से अलग होता है। कहने को तो दोनों ही आम हैं, लेकिन स्वाद दोनों का एक नहीं है।

अपंग, अनाथ, विधवा वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवारत्

निःशक्तजनों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संस्थान द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आपश्री से सादर प्रार्थना है कि ईश्वरीय कार्य में अपना सहयोग प्रदान करावें-मान्यवर !

मोबाइल/होम एप्लायर्सेस रिपेयरिंग/कम्प्यूटर/सिलाई/ हार्डवेयर एण्ड नेटवर्किंग प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7500/-	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000/-
3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22500/-	20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	150000/-
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37500/-	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	225000/-

दवाई सहयोग प्रतिदिन

1 निःशक्त दवाई सहयोग राशि –	1000/-	51 निःशक्त दवाई सहयोग राशि –	51000/-
11 निःशक्त दवाई सहयोग राशि –	11000/-	101 निःशक्त दवाई सहयोग राशि –	101000/-
21 निःशक्त दवाई सहयोग राशि–	21000/-	501 निःशक्त दवाई सहयोग राशि –	501000/-

50 रोगियों की आजीवन भोजन / नाश्ता मित्ती		बालगृह शिक्षा सहयोग योजना	
एक दिन दोनों समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	- 22,000/-	एक बच्चे के एक माह की शिक्षा सहयोग राशि	-600/-
एक दिन एक समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	- 11,000/-	एक बच्चे के एक वर्ष की शिक्षा सहयोग राशि	-7200/-
एक दिन की आजीवन नाश्ता मित्ती सहयोग राशि	- 5,000/-		

आजीवन पालनहार योजना 1,00,000/-

आप बन सकते हैं किसी अनाथ निर्धन बच्चे के आजीवन पालनहार 1 लाख रूपयों का अनुदान करके। (एक बच्चा 18 वर्ष तक की आयु तक अथवा 18 वर्ष के बाद भी यदि वह उच्च शिक्षण प्राप्त कर चाहेगा तो संस्थान के सान्निध्य में ही रहेगा।)

भगवान महावीर बालगृह योजना (बालगृह भोजन मित्ती)

एक बालक का एक माह का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि - 2100/-

एक बालक का एक वर्ष का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि- 2100 X12 =25,200/-

एक बच्चे पर सम्पूर्ण वार्षिक खर्च

भोजन खर्च सहयोग राशि	- 2100 X12 = 25,200/-	शिक्षा खर्च	- 600 X 12 = 7200 /-
स्वास्थ्य सम्बन्धी खर्च	- 2500/-	विविध खर्च (शिक्षण, खेलकूद सामग्री, वस्त्र, पिकनिक आदि) राशि	- 6900/-
कुल वार्षिक खर्च सहयोग राशि	- 41800/-		

प्रति निःशक्त शिविर सहयोग राशि – 1,51000/-

सम्पर्क करें-09929534444 E-mail : planning@narayanseva.org

आयकर में छूट-संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 G (आयकर दाता) के लिए 50 प्रतिशत तथा 35 AC के तहत (कम्पनियों, प्रतिष्ठानों के लिए) 100 प्रतिशत कर मुक्त (Tax Exempted)

मेरा जन्म दिवस – अस्सीवें जन्म दिवस पर विशेष स्मरणीय

हर वर्ष मेरा जन्म दिवस बड़े सुन्दर ढंग से मनाया जाता है। हजारों साधक मेरे दर्शनार्थ आते हैं, वह दर्शन जिनसे एक बार मैंने तुम्हें अपने पंखों पर बिठा कर संसार भ्रमण करवा कर आनन्दित किया था। परन्तु यह मत सोचो कि यह मेरा जन्म दिवस है जो मनाया जाता है। मैं तुममें से प्रत्येक का एक अंश हूँ। मैं स्वयं को उस विशाल असीमित में उडेल देता हूँ और एक वर्ष के लिये और, एक अग्रगामी वर्ष के लिये तुम मेरी गंगा के सरिता मुख में विलीन हो जाते हो। जैसे–जैसे जन्म दिन बीतते चले जाते हैं, तुम समुद्र से उठकर माधुर्य के महासागर में विलीन होने के लिये अपनी बारी की प्रतीक्षा करते रहते हो। जब मैं अगाध तीहीन पात्र से अपना अमृत उडेलता हूँ, तो मैं तुम में से प्रत्येक को ऊपर उठा कर अपने वक्ष से लगा`रहा होता हूँ, नहीं नहीं अपने वक्ष से नहीं, क्योंकि तुम सब तो मेरा अंश ही हो। इस प्रकार जन्म दिन उत्सव पर वे सभी भक्तगण, जो मेरे सागर तक पहुँच चुके होते हैं एक हो कर उठते हैं। उस समय जिस आनन्द का तुम अनुभव करते हो वह समस्त कडुवाहट को पीछे छोड़ आने एवं मेरे दिव्य प्रकाश में नहा लेने के परिणामस्वरूप होता है।

मेरे उपदेशों ने तुम्हें जीवन को एक निरन्तर धारा के समान समझना सिखाया है, वह धारा जो सूर्योदय या सूर्यास्त से रहित है, वह धारा जो जब चाहे मेरी सरिता में आकर विलीन हो सकती है, वह धारा जो संकीर्ण अथवा विस्तृत, छिछली अथवा गहरी, शान्त अथवा अशान्त हो सकती है। यह जीवन धारा वैसी ही बन जाती है जैसा तुम इसे बनाना चाहते हो। तुम एक साफ अथवा खुरदरा तल चुन सकते हो। तुम उछलकूद कर अथवा सरक कर चल सकते हो। तुम चंचल व क्रुद्ध हो सकते हो अथवा गीत गाते हुए प्रसन्नचित रह सकते हो। यह सब स्वयं तुम पर निर्भर करता है।

"परन्तु चार्ल्स, सब कुछ मैं ही हूँ, वह तुम नहीं हो जो असहनशीलता, समूह जनसंहार व गहरे घावों से पीड़ित हो। नहीं, यह सब पीड़ा मेरी है जो अंतिम परम आनन्द की तुलना में केवल माया की छाया है। जब मनुष्य को यह भ्रम हो जाता है कि वह सृजनकर्ता है तो वह अपना विनाश होता हुआ अनुभव करता है। उस प्रत्येक वेदना के लिये जो तुम सहन करते हो, मैं तुम्हें एक–एक हजार वर्ष तक अपनी छाती से लगाये रखूँगा।"

–श्री सत्य साई बाबा द्वारा चार्ल्स पेन को दिये गये दिव्य सन्देश से

मूल्य शिक्षा का सम्पूर्ण आयाम–सत्य साई एजूकेअर

प्रोफेसर पी.के.साहू, आचार्य, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

पिछले अंक में हमने डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता द्वारा लिखित एक निबंध पढ़ा जिसमें विज्ञान शिक्षण के माध्यम से विभिन्न प्रकार के मूल्यों का विकास कैसे किया जाए, का उल्लेख था। यह एक नयी बात है कि आज–कल हम लोग विद्यालयी पाठ्यक्रम एवं सम्बन्धित विषय वस्तु के सन्दर्भ में केवल विषय ज्ञान पर जोर न देकर मूल्यात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष पर भी प्राथमिकता देने लगे हैं। यह एक अच्छी बात है कि विषय ज्ञान के माध्यम से सम्प्रत्ययों की अवधारणा स्पष्ट होती है, सैद्धान्तिक ज्ञान मिलता है परन्तु जीवन के अनुभव के साथ विचार एवं मूल्य पक्ष को भी ध्यान देना उतना ही आवश्यक है। मूल्य शिक्षा आधारित पाठ्यक्रम पर सरकारी स्तर पर बातें तो कही जाती है परन्तु जमीनी स्तर पर विद्यालय एवं अभिभावकों की अपेक्षा यही रहती है कि बालक कितने अधिक से अधिक अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण हो जो कि सूचना आधारित शिक्षा का परिचायक है। आज भी हमारे देश में मूल्य आधारित शिक्षा के विकास हेतु अनेक सुनियोजित संस्थाएँ तत्पर है जिसमें सत्य साई मूल्य शिक्षा अधिगम संस्थान, पुट्टपर्ती अद्वितीय स्थान रखता है।

मूल्य शिक्षा के आयाम

आयाम पर विचार करने से पहले हमें मूल्य की संकल्पना को भी समझना उचित होगा। क्योंकि संकल्पना की अवधारणा का विकास एवं अपनाये जाने वाले आयाम परस्पर सम्बन्धित है। हम सभी लोग जानते हैं कि मूल्य हमारे भावात्मक पक्ष से जुड़ा हुआ होता है। मूल्यात्मक उद्देश्य भावात्मक पक्ष का चरम बिन्दु है, तो फिर ज्ञान प्राप्ति से सम्बन्धित आयाम को तो हम मूल्य प्राप्ति का आयाम नहीं मान पायेगें। परन्तु चिन्ता की बात यह है कि मूल्य शिक्षा के नाम पर जो भी विधियाँ अपनायी जाती है वह साधारणतया सूचना एवं जागृति के विकास के अनुरूप जैसे कि किताब पढ़ना, व्याख्यान सुनना, चित्र देखना, इसके साथ–साथ मूल्य शिक्षा की उपलब्धि का मापन एवं मूल्यांकन ऐसे ही किया जाता है जैसे कि किसी अन्य विषय का मापन एवं परीक्षण किया जाता है। इसके चलते मूल्य शिक्षा को गणित, विज्ञान सामाजिक अध्ययन जैसे विषय शिक्षण के रूप में गिना जाता है। इस प्रकार के उपचार से मूल्य शिक्षा का मूल्य नगण्य हो रहा है।

श्री सत्य साई एजूकेयर एवं मूल्य शिक्षा

श्री सत्य साई एजूकेयर मूल्य शिक्षा को सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के रूप में मान्यता देता है, भगवान बाबा के अनुसार मूल्य प्रत्येक व्यक्ति की असली प्रकृति है, यह प्रत्येक व्यक्तित्व में अंतर्निहित है, जैसे–सत्य, धर्म, प्रेम अहिंसा एवं शांति। यदि इन गुणों को अन्दर से बाहर निकालने में मदद की जायेगी तो मानव की असली मानवता का परिचय मिलेगा। अन्यथा मनुष्य और मानव में क्या अन्तर है ? बाबा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति मानव मूल्यों के माध्यम से रूप (आकार) एवं व्यवहार (आचार) द्वारा मानवता का परिचय देता है। शिक्षा की मुख्य भूमिका है कि कैसे अंतर्निहित मानव मूल्यों द्वारा सर्वांगीण विकास में बालक को पूर्ण अवसर प्रदान किया जाय ? इस संदर्भ में मानव के आंतरिक एवं बाह्य वातावरण को समायोजित करना एक आवश्यक तत्व है। इसलिए प्रत्येक बालक कैसे आंतरिक एवं बाह्य वातावरण में समायोजन लाकर मूल्यों के विकास में स्वयं की भागीदारी बना पायेगा यह शिक्षा के लिए एक चुनौती है। सात्य साई एजूकेयर इस बिन्दु पर अधिक बल देता है।

श्री सत्य साई बाबा के द्वारा पहचाने गये 5 विशेष मूल्य जिसको कि 5डी2 के रूप में जाना जाता है यथा 1. विभेदीकरण, 2. दृढ़ संकल्प, 3. अनुशासन, 4. भक्ति पूर्ण समर्पण, 5. कर्त्तव्य। इन मूल्यों का विकास तो विषय वस्तु शिक्षा जैसे उपचार से सम्भव न होगा। अतः मूल्य शिक्षण को एक सम्पूर्ण अन्तर सम्बन्धी उपाय के माध्यम से अपनाना होगा। जैसे कि एजूकेयर में व्यक्तित्व के ज्ञानपक्ष, भावात्मक पक्ष एवं क्रियात्मक पक्ष को इन 5 मूल्यों के विकास के साथ जोड़ देना आवश्यक होगा। इस सम्बन्ध में यह कहना

आवश्यक होगा कि मूल्य विकास में प्रत्येक बालक को स्वयं के अनुभव को प्राथमिकता देना आवश्यक होगा। यह अनुभव बालक के ज्ञानात्मक पक्ष (विचार), भावात्मक पक्ष (दृढ़ संकल्प एवं भक्तिपूर्ण समपर्ण) एवं क्रियात्मक पक्ष (अनुशासन एवं कर्तव्य) के समन्वय से ही सम्भव हो पायेगा। इसलिए प्रत्येक बालक को स्वयं के वातावरण के संदर्भ में स्वनिवेश के माध्यम से इन अनुभवों का विकास करने हेतु अवसर/सहयोग देना उचित होगा। इस प्रकार की शिक्षा बालक की दिनचर्या से जुड़ी समस्त गतिविधियों में परिलक्षति हो पायेगी। इसलिए मूल्य शिक्षा को विषयवस्तु शिक्षा जैसा रूप न देकर विद्यालयी वातावरण से समन्वित कर देना उचित होगा। विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, जिसमें विद्यार्थी स्वयं स्वेच्छा से व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से भाग लेकर स्वयं के अनुभव को मानवीय मूल्य परक रूप दे पायेंगे, ऐसा आयोजन करना चाहिए। विषय वस्तु शिक्षण को यांत्रिकी माना जाता है जिससे मानवीय अनुभव को कम महत्व दिया जाता है। इस प्रकार के उपचार से मानवीय मूल्य शिक्षा का स्वरूप नगण्य हो जायेगा। इसलिए हम यह अपेक्षा रखते है कि प्रत्येक विद्यालय का वातावरण, शिक्षण अधिगम गतिविधि, शिक्षक–छात्र सम्बन्ध, शिक्षक–अभिभावक सम्बन्ध, शिक्षक–अभिभावक सम्पर्क इतना सजीव और मनोरम हो जाय कि यांत्रिक रूपी विषय शिक्षा से मुक्त होकर अनुभव आधारित सम्पूर्ण मानव मूल्य शिक्षा की झलक प्रत्येक बालक के व्यवहार में परिलक्षित हो। भगवान श्री सत्य साई बाबा के विशेष प्रयास से एजूकेयर इस प्रकार के मूल्य शिक्षा हेतु एक अद्भूत उदाहरण है। आशा रखते हैं कि शीघ्र ही सामान्य विद्यालयी शिक्षा भी भगवान श्री सत्य साई बाबा के मूल्य शिक्षा के मूल्य के इस प्रयोग से अनुप्राणित होगी।

कमलनाथ महादेव मंदिर

जहां रावण ने स्वयं अपना मस्तक काट कर भगवान शिव को अर्पण किया था

झीलों की नगरी उदयपुर से लगभग 80 किलोमीटर झाड़ौल तहसील में आवारगढ़ की पहाडियों पर शिवजी का एक प्राचीन मंदिर स्थित है जो कमलनाथ महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। पुराणों के अनुसार इस मंदिर की स्थापना स्वंय लंकापति रावण ने की थी। यही वह स्थान है जहां रावण ने अपना शीश भगवान शिव को अग्निकुंड में समर्पित कर दिया था जिससे प्रसन्न होकर भगवान शिव नें रावण की नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित किया था। इस स्थान की सबसे बड़ी विशेषता यह है की यहां भगवान शिव से पहले रावण की पूजा की जाती है क्योकि मान्यता है की शिव से पहले यदि रावण की पूजा नहीं की जाए तो सारी पूजा व्यर्थ जाती है।

एक बार लंकापति रावण भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए कैलाश पर्वत पर पहुंचे और तपस्या करने लगे, उसके कठोर तप से प्रसन्न हो भगवान शिव ने रावण से वरदान मांगने को कहा। रावण ने भगवान शिव से लंका चलने का वरदान मांग डाला। भगवान शिव लिंग के रूप में उसके साथ जाने को तैयार हो गए, उन्होंने रावण को एक शिव लिंग दिया और यह शर्त रखी कि यदि लंका पहुंचने से पहले तुमने शिव लिंग को धरती पर कहीं भी रखा तो मैं वहीं स्थापित हो जाऊंगा। कैलाश पर्वत से लंका का रास्ता काफी लम्बा था, रास्ते में रावण को थकावट महसूस हुई और वह आराम करने के लिए एक स्थान पर रुक गया। और ना चाहते हुए भी शिव लिंग को धरती पर रखना पड़ा।

आराम करने के बाद रावण ने शिव लिंग उठाना चाहा लेकिन वह टस से मस ना हुआ, तब रावण को अपनी गलती का एहसास हुआ और पश्चाताप करने के लिए वह वहीं पर पुनः तपस्या करने लगे। वो दिन में एक बार भगवान शिव का सौ कमल के फूलों के साथ पूजन करते थे। ऐसा करते–करते रावण को साढ़े बारह साल बीत गए। उधर जब ब्रह्मा जी को लगा कि रावण की तपस्या सफल होने वाली है तो उन्होंने उसकी तपस्या विफल करने के उद्देश्य से एक दिल पूजा के वक्त एक कमल का पुष्प चुरा लिया। उधर जब पूजा करते समय एक पुष्प कम पड़ा तो रावण ने अपना एक शीश काटकर भगवान शिव को अग्नि कुण्ड में समर्पित कर दिया। भगवान शिव रावण की इस कठोर भक्ति से फिर प्रसन्न हुए और वरदान स्वरुप उसकी नाभि में अमृत कुण्ड की स्थापना कर दी। रावण के कमल के फुलों से भगवान शिव की पूजा करने के कारण यह स्थान कमलनाथ महादेव के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पहाड़ी पर मंदिर तक जाने के लिए आप नीचे स्तिथ शनि महाराज के मंदिर तक तो अपना साधन लेके जा सकते है पर आगे का 2 किलोमीटर का सफर पैदल ही पूरा करना पड़ता है। इसी जगह पर भगवान राम ने भी अपने वनवास का कुछ समय बिताया था।

सम्पादकीय

श्रममेव जयते

बिना मेहनत के जीवन की गति संभव नहीं है। जीवन एक नहर के समान है। जब तक वह परिश्रम की नदी से जुड़ी रहती है, जब तक जल की कलकल से सक्रिय रहती है परन्तु यदि उसे नदी से काट दिया जाए तो फिर वह सूख जाती है। नहर सूख जाने के कारण समीपवर्ती सभी खेत सिंचाई से वंचित रह जाते है, जिसका प्रतिफल बहुत विनाशपूर्ण एवं घातक सिद्ध होता है। इसलिए, हमें अपने जीवन की नहर को परिश्रम रूपी नदी से कभी भी अलग नहीं करना चाहिए। साथ ही यह भी नहीं भूलना चाहिए कि जिस परमपिता परमेश्वर ने इस सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है, उसके प्रति हमें सदा कृतज्ञ रहना चाहिए। इस कृतज्ञतापूर्ण भावना से हमें आतंरिक शक्ति एवं साहस मिलता है। हमारी सम्पूर्ण शक्ति का स्त्रोत वही सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर है। वह सागर के समान गंभीर और विशाल है और ब्रह्माण्ड़ के समान सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है। उसके शक्तिपुंज मे से बिन्दु जैसे अंश के सहारें ही हम कठपुतलियों की तरह चलते–फिरतें है। यदि उसकी अंगुलियों से हमारी डोर टूट जाए, तो हमारा अस्तित्व शून्यमय होकर विलीन हो जाएगा।

उसकी असीम शक्ति से हमें बल मिलता है। पग–पग पर बढ़नें के निर्देश को हम महसूस कर पाते है। मिसाल के तौर पर किसी के आक्रमण से हम तुरंत सचेत एवं सतर्क हो जाते है, चाहे वह आक्रमण कितना ही छिप कर अनायास क्यों न किया गया हो। उस समय हमारी रक्षा हेतु वही अदृश्य निर्देश हमें सचेत कर देता है। उसी विराट शक्ति सागर की एक बूँद पाकर हम महाशक्ति के स्वामी बन जाते है। संसार के प्रत्येक सबलतम संघर्ष का सामना करने के लिए सक्षम और समर्थ हो जाते है। उसी अद्‌भुत शक्ति और आत्मविश्वास की ऊर्जा लेकर व्यक्ति अपना प्रत्येक कार्य सम्पन्न करता है और मार्ग में आने वाली बाधाओं व विपदाओं को परास्त करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता चला जाता है। ऐसे ही कर्मठ और परिश्रमी लोगों का भविष्य उज्ज्वल होता है और उनकी सफलता में रंचमात्र भी संदेह नही रहता है।

इस संसार के प्रत्येक सुख का आनन्द भोगने का सर्वप्रथम अधिकार आपका है, क्योंकि आपने इन्हे कठोर परिश्रम के पश्चात प्राप्त किया है। जो लोग कठिन परिश्रम करते है, चोटी का पसीना एड़ी तक बहा देते है, काम करते समय रात–दिन एक कर देते है, वे ही सुख–समृद्धि के सच्चे हकदार समझे जाते है। परिश्रम से प्राप्त समृद्धि से व्यक्ति को जितना सुख, संतोष और आनंद मिलता है उसकी तुलना में संसार का कोई वैभव हल्का महसूस होता है।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित नि:शुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्रं.स.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1.	विशाल कुमार	प्रतापनाथ	1	पुरूष	राजसमंद	राजस्थान
2.	शिखा जाटव	देशराज जाटव	2	स्त्री	मुरैना	मध्यप्रदेश
3.	राज यादव	शैलेश	2	पुरूष	जौनपुर	उत्तरप्रदेश
4.	आजमी खातून	सलीम	3	स्त्री	अमरोहा	उत्तरप्रदेश
5.	आर्यन यादव	देवेन्द्र यादव	4	पुरूष	झॉसी	उत्तरप्रदेश
6.	प्रिन्स कुमार	राकेश कुमार	7	पुरूष	वैशाली	बिहार
7.	लोकेश शर्मा	दुर्गालाल	8	पुरूष	अजमेर	राजस्थान
8.	तन्नू जोशी	अशोक जोशी	8	स्त्री	अम्बाला	हरियाणा
9.	धीरज सुथार	टीकमचंद	9	पुरूष	जालौर	राजस्थान
10.	लखन सिंह	तूफान सिंह	9	पुरूष	मन्दसौर	मध्यप्रदेश
11.	सुधांशू चमार	रामहेत	9	पुरूष	हरदोई	उत्तरप्रदेश
12.	परदीश कुमार	हंसराज	10	पुरूष	झालावाड़	राजस्थान
13.	कौस्तब भौमिक	कौशिक	13	पुरूष	अलीपुरद्वार	पं. बंगाल
14.	सागर कश्यप	श्रवण	14	पुरूष	शामली	उत्तरप्रदेश
15.	नैना कुमारी	बहमदेव	14	स्त्री	दिल्ली	न्यू दिल्ली
16.	मुकुल शर्मा	प्रमोद शर्मा	17	पुरूष	दिल्ली	न्यू दिल्ली
17.	राजू कुमार	उमेश कुमार	20	पुरूष	बोकारो	झारखण्ड
18.	केशवदेव	वीरी सिंह	22	पुरूष	हाथरस	उत्तरप्रदेश
19.	राजथ	पुत्तारजू	22	पुरूष	मईसोर	कर्नाटक
20.	शकील	मखमूल	29	पुरूष	मुजफ्फरनगर	उत्तरप्रदेश

क्रमशः

राजा राम मोहन राय

जिन्होनें हमें आधुनिकता की राह दिखाई

राजा राम मोहन राय का जन्म 22 मई 1772 को बंगाल के हुगली जिले के राधा नगर गाँव में हुआ था। पिता का नाम रमाकान्त राय एवं माता का नाम तारिणी देवी था। उनके प्रपितामह कृष्ण चन्द्र बनर्जी बंगाल के नवाब की सेवा में थे। उन्हें राय की उपाधि प्राप्त थी। ब्रिटिश शासकों के समक्ष दिल्ली के मुगल सम्राट की स्थिति स्पष्ट करने के कारण सम्राट ने उन्हें राजा की उपाधि से विभूषित किया था।

राजा राम मोहन राय की शिक्षा और विज्ञान में गहरी आस्था थी। आपके शिक्षा संबन्धी विचार रचनात्मक थे। 1816 में आपने कलकत्ता में अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की। ये पहला अंग्रेजी स्कूल था जिसका व्यय पूर्णतः भारतीयों द्वारा वहन किया जाता था। आपके प्रयासों से 1822 तथा 1823 में हिन्दू कॉलेज की स्थापना हुई। राजा राम मोहन राय ने अपने मस्तिष्क पर पूर्वाग्रहों को कभी भी हावी होने नहीं दिया। उनका मानना था कि अंग्रेजी शिक्षा और पश्चिमी शिक्षा भारत के लिये लाभदायक है। आपने वेदों तथा उपनिषदों का बंगाली तथा अंग्रेजी में अनुवाद किया। आपने इस बात का खण्डन किया कि ईसाई स्कूल में बाइबिल पढाने से जाति भ्रष्ट होने का डर रहता है। इस संदर्भ में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि "किसी भी धर्म का ग्रन्थ पढ़ने से जाति भ्रष्ट होने का प्रश्न ही नहीं उठता मैंने बहुत बार बाइबिल और कुरान शरीफ को पढा मैं न ईसाई बना और न ही मुसलमान बना। बहुत से यूरोपीय गीता तथा रामायण पढते हैं, वो तो हिन्दू नहीं हुए।"

समाज सुधारक राजा राम मोहन राय का मानना था कि राजनीतिक विकास का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक समाज का सुधार या विकास नहीं होगा। समाज सुधार में स्त्री शिक्षा के वे पक्षधर थे। अतः नारी शिक्षा और स्त्रियों के अधिकारों पर विशेष बल दिये । राजा राम मोहन राय पहले भारतीय हैं जिन्होंने ये कहा कि पिता की सम्पत्ति में बेटी का भी कानूनी हक होना चाहिये। नारी पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आपने आवाज उठाई थी। विधवा विवाह के समर्थक थे। बाल विवाह के विरोधी थे। राजा राम मोहन राय परम्परा के खिलाफ थे क्योंकि उनका कहना था कि परम्परा के तहत कई बार अविवेक पूर्ण कार्य को श्रद्धा का विषय बना दिया जाता है। सामाजिक समस्याओं के प्रति सदैव जागरूक रहे। वे जमींदारों को किसानों का शोषक कहते थे। 15 नवम्बर 1830 को समुद्री रास्ते से इंग्लैण्ड के लिये रवाना हुए। अप्रैल 1832 को इंग्लैण्ड पहुँचे जहाँ अंग्रेजों ने आपका स्वागत स्नेह और सम्मान के साथ किया। 27 सितंबर 1833 को ब्रिस्टल में इस नश्वर संसार का त्याग करके ब्रह्म लोक में विलीन हो गये।

अधर्म है आश्रित का त्याग

महाराज युधिष्ठिर ने जब सुना कि श्रीकृष्ण ने अपनी लीला का संवरण कर लिया है और यादव परस्पर की कलह से ही नष्ट हो चुके है, तब उन्होंने अर्जुन के पोत्र परिक्षित का राजतिलक कर दिया। स्वयं सब वस्त्र एवं आभूषण उतार दिए। मौनव्रत लेकर केश खोले, वीर – सन्यास लेकर वे राजभवन से निकले और उत्तर दिशा की ओर चल पडे। उनके शेष भाइयों तथा द्रौपदी ने भी उनका अनुगमन किया।

धर्मराज युधिष्टिर ने सब माया – मोह त्याग दिया था। उन्होंने न भोजन किया, न जल पीया और न विश्राम किया। बिना किसी ओर देखे या रूके वे बराबर चलते ही गए और हिमालय में बद्रीनाथ से आगे बढ़ गए। उनके भाई तथा रानी द्रौपदी भी बराबर उनके पीछे चलते रहे। सत्यपथ पार हुआ और स्वर्गारोहण की दिव्य भूमि आई।

द्रौपदी, नकुल, सहदेव, अर्जुन – ये क्रमशः गिरने लगे। जो गिरता था, वह वही रह जाता था। उस हिम समाधि प्रदेश में गिरकर फिर उठने की चर्चा ही व्यर्थ हैं। शरीर तो तत्काल हिम समाधि पा जाता है। उस पावन प्रदेश में प्राण त्यागने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति से भला कौन रोक सकता है। युधिष्ठिर न रूकते थे और न गिरते हुए भाइयों की ओर देखते ही थे। वे राग – द्वेष से परे हो चुके थे। अंत मे भीमसेन भी गिर गए। युधिष्ठिर जब स्वर्गाराहण के उच्चतम शिखर पर पहुँचे, तब भी अकेले नहीं थे। उनके भाई और रानी द्रौपदी मार्ग में गिर चुके थे, लेकिन एक कुत्ता उनके साथ था। यह कुत्ता हस्तिनापुर से उनके पीछे – पीछे आ रहा था।

उस शिखर पर पहुँचते ही स्वयं देवराज इंद्र विमान में बैठकर आकाश से उतरे। उन्होंने युधिष्ठिर का स्वागत करते हुए कहा – ''धर्मराज, आपके धर्माचरण से स्वर्ग अब आपका है। विमान में बैठिए।'' युधिष्ठिर ने जब अपने भाइयों तथा द्रौपदी को भी स्वर्ग ले जाने की प्रार्थना की तो देवराज इंद्र बोले –''धर्मराज, वे तो पहले ही वहां पहुँच गए हैं।''

तब युधिष्ठिर ने दूसरी प्रार्थना की –''भगवन्, इस कुत्ते को भी विमान में बैठा लें।''

इंद्र ने कहा – ''आप धर्मज्ञ होकर ऐसी बात क्यों करते हैं ? स्वर्ग में कुत्ते का प्रवेश कैसे हो सकता है ?'' यह अपवित्र प्राणी मुझे देख सका, यही बहुत है। युधिष्ठिर बोले ''यह मेरा आश्रित है। मेरी भक्ति के कारण ही नगर से इतनी दूर मेरे साथ आया है। आश्रित का त्याग अधर्म है। इस आश्रित का त्याग मुझे अभीष्ट नहीं, इसके बिना मैं अकेले स्वर्ग नहीं जाना चाहता।'' युधिष्ठिर की बात सुनकर देवराज बोले – ''राजन, स्वर्ग की प्राप्ति पुण्यों के फल से होती है। यह पुण्यात्मा ही होता तो इस अधम योनि मे जन्म ही क्यों लेता ,''

इस पर युधिष्ठिर बोले – ''भगवन्, मैं अपना आधा पुण्य इसे अर्पित करता हूँ।'' ''धन्य हो, धन्य हो युधिष्ठिर ! मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न हूँ।'' युधिष्ठिर ने देखा कि कुत्ते का रूप त्यागकर साक्षात् धर्म देवता उनके सम्मुंख खड़े हो उन्हें आर्शिवाद दे रहे हैं।

सफलता प्राप्ति का आध्यात्मिक नियम

सफलता का आध्यात्मिक नियम "अनासक्ति का नियम" है। इस नियम के अनुसार व्यक्ति को भौतिक संसार में कुछ भी प्राप्त करने के लिए वस्तुओं के प्रति मोह त्यागना होगा। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि वह अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपने उद्देश्यों को ही छोड़ दे। उसे केवल परिणाम के प्रति मोह को त्यागना है। व्यक्ति जैसे ही परिणाम के प्रति मोह छोड़ देता है। उसी समय वह अपने एकमात्र उद्देश्य को अनासक्ति से जोड़ लेता है। तब वह जो कुछ भी चाहता है, उसे स्वयमेव मिल जाता है।

अनासक्ति के नियम का पालन करने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना होगा, आज मैं अनासक्त रहने का वायदा करता हूँ। मैं स्वयं को तथा आसपास के लोगों को पूर्ण रूप से स्वतंत्र रहने की आजादी दूँगा। चीजों को कैसा होना चाहिए, इस विषय पर भी अपनी राय किसी पर थोपूंगा नहीं। मैं जबरदस्ती समस्याओं के समाधान खोजकर नयी समस्याओं को जन्म नहीं दूँगा। मैं चीजों को अनासक्त भाव से लूँगा। सब कुछ जितना अनिश्चित होगा। मैं उतना ही अधिक सुरक्षित महसूस करूँगा क्योंकि अनिश्चितता ही मेरे लिए स्वतंत्रता का मार्ग सिद्ध होगी। अनिश्चितता को समझते हुए मैं अपनी सुरक्षा की खोज करूँगा।

नारायण सेवा में होलिका दहन

नारायण सेवा संस्थान के सेक्टर–4 एवं बड़ी स्थित परिसरों में होली पर उत्साह से मनाया गया। संस्थान संस्थापक कैलाश 'मानव' व सहसंस्थापिका श्रीमती कमला देवी अग्रवाल ने होलिका दहन से पूर्व मंत्रोंचार के साथ पूजा की। दूसरे दिन साधकों ने उत्साह से रंगोत्सव मनाया। इस अवसर पर श्री प्रशान्त अग्रवाल, श्रीमती वंदना अग्रवाल, जगदीश जी आर्य आदि भी उपस्थित थे।

अंगूर खाने के फायदे

- अंगूर दमा के रोगियों के लिए बहुत अच्छा होता है दमा को ठीक करने में अंगूर काफी सहायक होता है।
- अंगूर हमारे हृदय के लिए बहुत अच्छा होता है दिल के रोगियों को अंगूर खाने से बहुत फायदा मिलता है।
- अंगूर का जूस माइग्रेन के दर्द को ठीक करने में काफी सहायक होता है।
- ये कब्ज को भी दूर कर देता हैअंगूर बदहजमी को भी ठीक कर देता है।
- अंगूर शरीर के गुर्दों को स्वस्थ रखता है।
- अभी हाल के ही अध्ययन से पता चला है की अंगूर ब्रेस्ट कैंसर को रोकने में मदद करता है।
- अंगूर में एंटी कैंसर की विशेषता पाई जाती है। जिससे कैंसर को ठीक करने में मदद मिलती है।
- लाल अंगूरों में एंटी बेक्टेरीयल की विशेषता पाई जाती है। जो की इन्फेक्शन से बचाने में हमारी मदद करता है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com